शहीद भगत सिंह

संगीता श्रीनिवासन
हाई स्कूल हिन्दी भाग २
८ फ़रवरी, २०११

शहीद भगत सिंह जी ने भारत की स्वतंत्रता या आज़ादी के लिये हिंसा के मार्ग से मदद करने की कोशिश की। इस लिये वे महत्वपूर्ण थे। वे एक शिक्षित और ज्ञानपूर्ण आदमी थे। वे अपनी जवानी में कई विषयों के बारे में जानते थे।

वे बंगा गाँव, लैलापुर जिला में, २७ सितम्बर, १९०७ को पैदा हुए थे। उनके पिता और माता के नाम श्री किशन सिंह और विद्या वती थे।

दोनों सिख थे और उनके परिवार ने आर्य समाज के तरीकों का पालन किया, लेकिन वे नास्तिक बन गये थे। लाला राजपूत राय जी आर्य समाज के संस्थापक थे। वे लोगों के लिये नेता थे।

भगत सिंह जी मार्क्सवादी थे। मार्क्सवाद, एक जर्मन से शुरु हुआ, जिसका नाम कार्ल मार्क्स था।

वे आर्य समाज स्कूल में पढ़े थे, परन्तु गाँधी जी के लिए उन्होंने अपनी सारी अंग्रेज़ी चीज़ों को जला दिया। जब वे राष्ट्रीय कालेज में पढ़ते थे, उनके माता पिता ने उनकी शादी करनी चाही। लेकिन उनका मानना था एक गुलाम देश में विवाह करना मौत के समान है। इस लिये उन्होंने शादी करने से साफ़ इनकार कर दिया।

जालियांवाला बाग के कांड का भगत सिंह पर बहुत असर हुआ। हिन्दुस्तानी लोग, जो अंग्रेजों से मारे गए थे, उनके लिये भगत सिंह बदला लेना चाहते थे।

वे पांच भाषाएँ जानते थे – हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी, उर्दू, और मराठी। उनके ज़्यादा शौक थे – नाटक, कुश्ती, संगीत, और पढ़ना। जब वे जेल में थे, उनके दोस्त, उनके लिये बहुत सारी किताबें लाते थे।

१९३१ में, जब वे दो साल जेल में थे, भगत सिंह जी ने ६४ दिन के लिये भूख हड़ताल की। इन्हीं दिनों में उन्होंने एक पुस्तक अग्रेज़ी में लिखी जिसका नाम है "मैं नास्तिक क्यों हूँ ?"

१९२३ में, १७ साल की उम्र में प्रथम पुरस्कार के साथ एक निबंध प्रतियोगिता जीती। उनका निबंध, हिन्दी भाषा को भारत की राष्ट्रीय भाषा बनाने के बारे में था। उनका मानना था कि स्वतंत्रता पाने के लिए भारत को एक संयुक्त राष्ट्र बनने की जरूरत है। एक संयुक्त राष्ट्र बनने के लिए, भारत में एक सामान्य भाषा की जरूरत था।

वे २३ मार्च, १९३१ में अधिक्षक सांडर्स को मारने के लिए फांसी पर चढ़ाए गए।

भारत माता की जय !